

अय (आय) का
माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्य प्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

वर्ष 2009

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील

+2 H. S. S. O.



निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड परीक्षा का विषय

2. परीक्षा का माध्यम _____ परीक्षा की दिनांक _____

3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर कोड सेट
 (सेट A, B, C, या D) अनिवार्यतः भरें
 स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

केन्द्र क्रमांक की सील
 केन्द्र क्रमांक 131012

पर्यवेक्षक/केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण
 प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :-

क :- संख्या शब्दों में अंकों में
 ख :- परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक में है।

ग :- उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न-पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

B
S
E
M
P

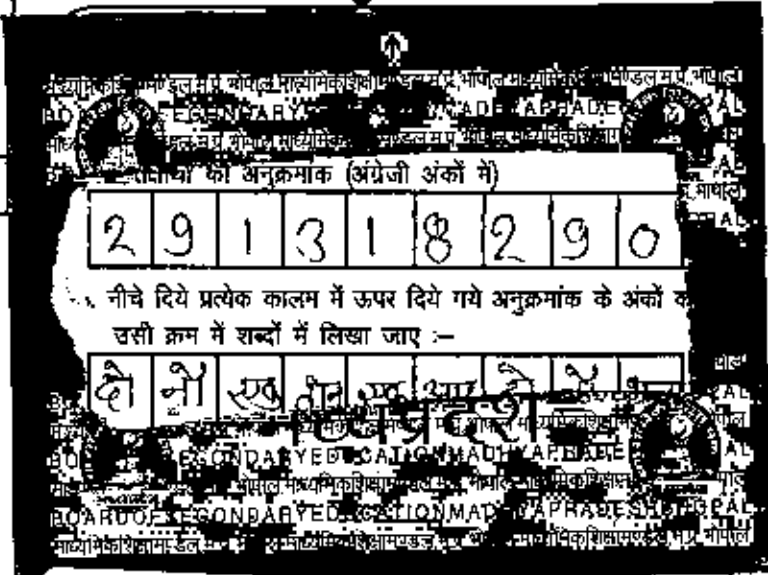
हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम पद

पता/संस्था
 परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।



प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या मूल्यांकन के समय उदा. पाठ 12 0, 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19, 20, 21, 22, 23, 24, 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31, 32, 33, 34, 35, 36, 37, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 44, 45, 46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53, 54, 55, 56, 57, 58, 59, 60, 61, 62, 63, 64, 65, 66, 67, 68, 69, 70, 71, 72, 73, 74, 75, 76, 77, 78, 79, 80, 81, 82, 83, 84, 85, 86, 87, 88, 89, 90, 91, 92, 93, 94, 95, 96, 97, 98, 99, 100, 101, 102, 103, 104, 105, 106, 107, 108, 109, 110, 111, 112, 113, 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120, 121, 122, 123, 124, 125, 126, 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, 141, 142, 143, 144, 145, 146, 147, 148, 149, 150, 151, 152, 153, 154, 155, 156, 157, 158, 159, 160, 161, 162, 163, 164, 165, 166, 167, 168, 169, 170, 171, 172, 173, 174, 175, 176, 177, 178, 179, 180, 181, 182, 183, 184, 185, 186, 187, 188, 189, 190, 191, 192, 193, 194, 195, 196, 197, 198, 199, 200, 201, 202, 203, 204, 205, 206, 207, 208, 209, 210, 211, 212, 213, 214, 215, 216, 217, 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, 226, 227, 228, 229, 230, 231, 232, 233, 234, 235, 236, 237, 238, 239, 240, 241, 242, 243, 244, 245, 246, 247, 248, 249, 250, 251, 252, 253, 254, 255, 256, 257, 258, 259, 260, 261, 262, 263, 264, 265, 266, 267, 268, 269, 270, 271, 272, 273, 274, 275, 276, 277, 278, 279, 280, 281, 282, 283, 284, 285, 286, 287, 288, 289, 290, 291, 292, 293, 294, 295, 296, 297, 298, 299, 300, 301, 302, 303, 304, 305, 306, 307, 308, 309, 310, 311, 312, 313, 314, 315, 316, 317, 318, 319, 320, 321, 322, 323, 324, 325, 326, 327, 328, 329, 330, 331, 332, 333, 334, 335, 336, 337, 338, 339, 340, 341, 342, 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350, 351, 352, 353, 354, 355, 356, 357, 358, 359, 360, 361, 362, 363, 364, 365, 366, 367, 368, 369, 370, 371, 372, 373, 374, 375, 376, 377, 378, 379, 380, 381, 382, 383, 384, 385, 386, 387, 388, 389, 390, 391, 392, 393, 394, 395, 396, 397, 398, 399, 400, 401, 402, 403, 404, 405, 406, 407, 408, 409, 410, 411, 412, 413, 414, 415, 416, 417, 418, 419, 420, 421, 422, 423, 424, 425, 426, 427, 428, 429, 430, 431, 432, 433, 434, 435, 436, 437, 438, 439, 440, 441, 442, 443, 444, 445, 446, 447, 448, 449, 450, 451, 452, 453, 454, 455, 456, 457, 458, 459, 460, 461, 462, 463, 464, 465, 466, 467, 468, 469, 470, 471, 472, 473, 474, 475, 476, 477, 478, 479, 480, 481, 482, 483, 484, 485, 486, 487, 488, 489, 490, 491, 492, 493, 494, 495, 496, 497, 498, 499, 500, 501, 502, 503, 504, 505, 506, 507, 508, 509, 510, 511, 512, 513, 514, 515, 516, 517, 518, 519, 520, 521, 522, 523, 524, 525, 526, 527, 528, 529, 530, 531, 532, 533, 534, 535, 536, 537, 538, 539, 540, 541, 542, 543, 544, 545, 546, 547, 548, 549, 550, 551, 552, 553, 554, 555, 556, 557, 558, 559, 560, 561, 562, 563, 564, 565, 566, 567, 568, 569, 570, 571, 572, 573, 574, 575, 576, 577, 578, 579, 580, 581, 582, 583, 584, 585, 586, 587, 588, 589, 590, 591, 592, 593, 594, 595, 596, 597, 598, 599, 600, 601, 602, 603, 604, 605, 606, 607, 608, 609, 610, 611, 612, 613, 614, 615, 616, 617, 618, 619, 620, 621, 622, 623, 624, 625, 626, 627, 628, 629, 630, 631, 632, 633, 634, 635, 636, 637, 638, 639, 640, 641, 642, 643, 644, 645, 646, 647, 648, 649, 650, 651, 652, 653, 654, 655, 656, 657, 658, 659, 660, 661, 662, 663, 664, 665, 666, 667, 668, 669, 670, 671, 672, 673, 674, 675, 676, 677, 678, 679, 680, 681, 682, 683, 684, 685, 686, 687, 688, 689, 690, 691, 692, 693, 694, 695, 696, 697, 698, 699, 700, 701, 702, 703, 704, 705, 706, 707, 708, 709, 710, 711, 712, 713, 714, 715, 716, 717, 718, 719, 720, 721, 722, 723, 724, 725, 726, 727, 728, 729, 730, 731, 732, 733, 734, 735, 736, 737, 738, 739, 740, 741, 742, 743, 744, 745, 746, 747, 748, 749, 750, 751, 752, 753, 754, 755, 756, 757, 758, 759, 760, 761, 762, 763, 764, 765, 766, 767, 768, 769, 770, 771, 772, 773, 774, 775, 776, 777, 778, 779, 780, 781, 782, 783, 784, 785, 786, 787, 788, 789, 790, 791, 792, 793, 794, 795, 796, 797, 798, 799, 800, 801, 802, 803, 804, 805, 806, 807, 808, 809, 810, 811, 812, 813, 814, 815, 816, 817, 818, 819, 820, 821, 822, 823, 824, 825, 826, 827, 828, 829, 830, 831, 832, 833, 834, 835, 836, 837, 838, 839, 840, 841, 842, 843, 844, 845, 846, 847, 848, 849, 850, 851, 852, 853, 854, 855, 856, 857, 858, 859, 860, 861, 862, 863, 864, 865, 866, 867, 868, 869, 870, 871, 872, 873, 874, 875, 876, 877, 878, 879, 880, 881, 882, 883, 884, 885, 886, 887, 888, 889, 890, 891, 892, 893, 894, 895, 896, 897, 898, 899, 900, 901, 902, 903, 904, 905, 906, 907, 908, 909, 910, 911, 912, 913, 914, 915, 916, 917, 918, 919, 920, 921, 922, 923, 924, 925, 926, 927, 928, 929, 930, 931, 932, 933, 934, 935, 936, 937, 938, 939, 940, 941, 942, 943, 944, 945, 946, 947, 948, 949, 950, 951, 952, 953, 954, 955, 956, 957, 958, 959, 960, 961, 962, 963, 964, 965, 966, 967, 968, 969, 970, 971, 972, 973, 974, 975, 976, 977, 978, 979, 980, 981, 982, 983, 984, 985, 986, 987, 988, 989, 990, 991, 992, 993, 994, 995, 996, 997, 998, 999, 1000

हस्ताक्षर (परीक्षक) हस्ताक्षर (उपमुख्य परीक्षक) हस्ताक्षर (मुख्य परीक्षक)
 परीक्षक क्रमांक दिनांक..... दिनांक.....

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक / विषय / माध्यम / दिनांक एवं प्रश्न-पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :-

| | | | | | | | | |
|----|----|----|-----|-----|----|------|----|----|
| 1 | 8 | 2 | 4 | 3 | 9 | 5 | 6 | 8 |
| एक | आठ | दो | चार | तीन | नौ | पाँच | छः | आठ |
3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोड़ें। भूल से छूटा / रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को 'क्रास' किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाएँ पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

3

या



प्रश्न नं-1 खण्ड-अ

30 (अ) (ii) मस्तिष्क में

30 (ब) (iv) विद्युत

30 (स) (iii) प्रोलेक्टिन

30 (द) (iv) एलास्टिक

B
S
E
M
P

प्रश्न नं-2

(अ) शरीर की सबसे बड़ी ग्रन्थि महाधमनी है

(ब) हृदय पक्षि रेडिगु और के भाग में उपस्थित रहता है

(स) धमनियों हृदय से शरीर के विभिन्न भागों को खून पहुँचाती हैं।

(द) निकट-दृष्टिदोष में अवतल लेन्स का उपयोग किया जाता है।

4

योग



प्रश्न नं-3

- 30 (अ) ~~मस्तिष्क~~ से असव्य
 (ब) ~~मस्तिष्क~~ असव्य
 (स) असव्य
 (द) सव्य

प्रश्न नं-4

- 30 (अ) प्रमस्तिष्क → शरीर का संतुलन
 (ब) सुषुम्ना नाडी → प्रतिवर्ती प्रिया
 (स) अनुमस्तिष्क → स्मृति
 (द) सराफाम → रवसन

प्रश्न नं-5

(अ) 30 पर्यावरण → वह जो किसी वस्तु को चारों ओर से आवृत कर उसे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है उस वस्तु का पर्यावरण कहलाता है।

B
S
E
M

योग

30 (क) 'AIDS' का पूरा नाम -

डिफिजियन्सी सिंड्रोम ~~एक वायरस इन्फेक्शन~~

(ख) अम्लोयुक्त वर्षा वह होती है जो वातावरण के प्रयुक्त अम्लों से होती है।

(ग) लक्षण में टेस्टोस्टेरोन हार्मोन स्वाभाविक होता है।

खण्ड-ख

प्रश्न नं-6

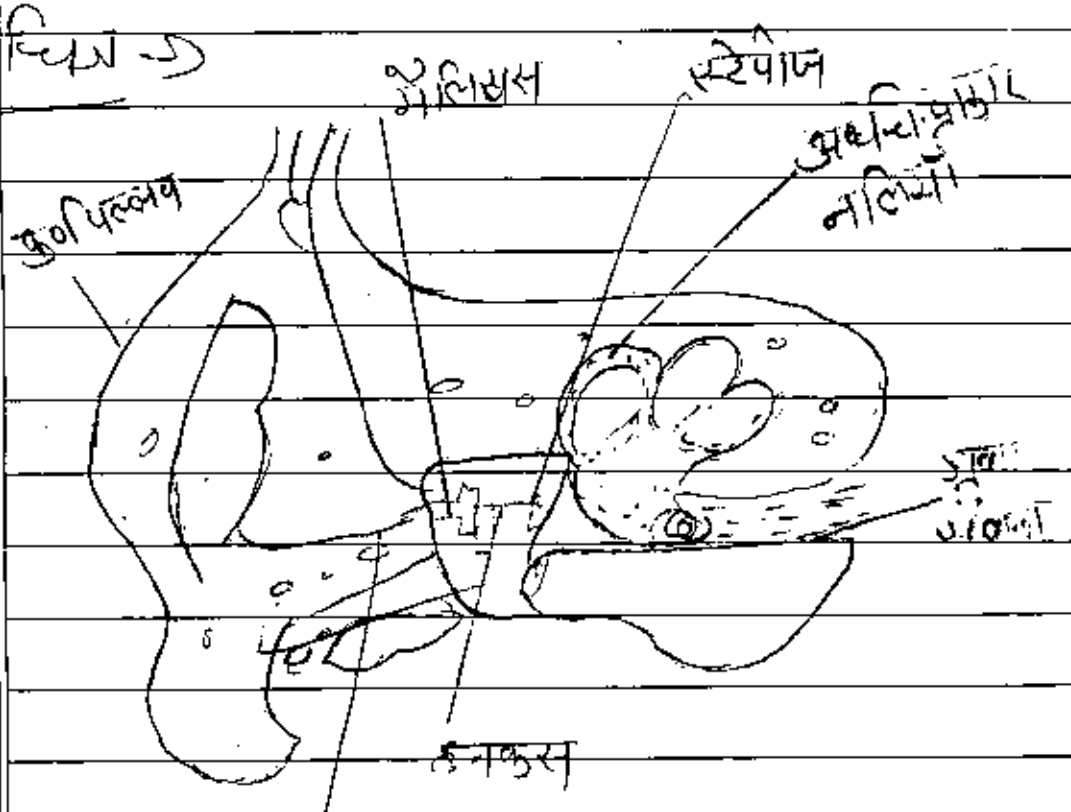
30 मध्य कर्ण -

कर्णपटल के भीतर की रिपैनेफुलुल्ला में स्थित कर्णगुहा होती है। कर्णगुहा एक चौड़ी कर्ण कण्ड नली द्वारा नासा कवचनी में खुलती है। यह नली कर्णपटल को अस्थि कु द्वाारा से बचाती है। कर्ण गुहा में दो छिद्र फुनेस्ट्रु और वेक्सु तथा फुनेस्ट्रु रोस्टस होते हैं जो अन्तःकर्ण से सम्बन्धित होते हैं। इसमें हृद तिरकी झिल्ली होती है।



कुण्डलिका म तान आरूप्य लाता
 हे । सबसे बडी हतियेनुमा मलियस
 अरिष्य निहाई के आकृति की
 इनकस अरिष्य और चौडे के
 एकाव के आकार की स्टेपीज
 अरिष्य होती है जो कर्ण अरिष्यकरी
 कहलाती है।

चित्र ->



कर्ण कुहर

कर्ण का नामांकित चित्र

B
S
E
M
P



प्रश्न - 10

30 स्पंडस से बचाव के उपाय -

स्पंडस से बचाव के उपाय निम्नलिखित हैं

(1) सेक्समिती व्यक्ति के यौन सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए।

(2) एक से अधिक महिलाओं और पुरुषों के साथ यौन सम्बन्ध नहीं बनाना चाहिए।

(3) ग्रसित महिला से विवाह नहीं करना चाहिए।

(4) इषित सुई सिरिंजों तथा रेंजर का उपयोग नहीं करना चाहिए।

(5) टीवी, रेडियो आदि के माध्यम से इस रोग के बारे में जन जागृति पैदा करना चाहिए।

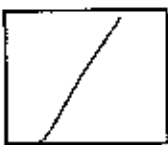
(6) किशोर बालक तथा बालिकाओं को इस रोग से सम्बन्धित पुस्तकें पढ़ने को देना चाहिए ताकि वे स्पंडस रोग के बारे में साजग हो सकें। स्पंडस का न कोई इलाज है और न ही कोई उपचार इस रोग से सुरक्षा ही स्पंडस का बचाव है।



प्रश्न न-11

30 पर्यावरण का अपकृष का मानव जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ रहा है। जनसंख्या की वृद्धि हो रही है जिससे औषध जल आदि की पर्याप्तता में कमी आती जा रही है। वायु वाहनों तथा उद्योगों से निकलने वाले धुँसे से प्रदूषित हो रही और प्रदूषित वायु ग्रहण की जाती है तो फुफुंडी तथा स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जल में बैक्टीरिया वायुस आदि कीटाणु वास्तु होते हैं जब ये दूषित जल कोई स्वास्थ्य व्यक्ति ग्रहण करता है तो उससे टायफाइड पैचिस, हेजा, अतिसार रोग हो जाते हैं। पर्यावरण ईश्वर दिया हुआ एक अमूल्य उपहार है हमारा धरातल, जलमण्डल, वायुमण्डल वनस्पति प्राणी व मिलकर पर्यावरण की रचना करते हैं। अगर समय रहते पर्यावरण प्रदूषण

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंश का यो



न रोके, न तो मानव जीवन सम्भव नहीं है पारिगा।

अतः हम सबको पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के उपाय करने होंगे।

प्रश्न नं-13

30. चामनी एवं शिरा में अन्तर निम्नलिखित हैं।

| चामनी | शिरा |
|---|--|
| (1.) चामनी में शुद्ध रक्त बहता है। | (1.) शिरा में अशुद्ध रक्त बहता है। |
| (2.) चामनी रक्त हृदय से विभिन्न भागों में ले जाती है। | (2.) शिरा विभिन्न भागों से अशुद्ध रक्त को हृदय को और ले जाती है। |
| (3.) चामनी में कपार नहीं पाये जाते हैं। | (3.) शिराओं में कपार पाये जाते हैं। |
| (4.) चामनी की गुहा कम चौड़ी होती है। | (4.) शिराओं की गुहा अधिक चौड़ी होती है। |

मोट- पीठे है।

B
S
E
M
P

पृष्ठ नं. _____
पेज _____



B
S
E
M
P

(5) धमनी का रंग बैंगनी या नीला होता है

(5) शिरा का रंग लाल या गुलाबी होता है

(6) मृत्यु के पश्चात धमनी का रंग गुलाबी हो जाता है

(6) मृत्यु के पश्चात शिराओं का रंग बैंगनी हो जाता है

(7) धमनी में रक्त धीरे धीरे से बहता है

(7) शिराओं में रक्त धीरे तथा समान गति से बहता है

(8) धमनी रक्त धीरे से आने पर न तो फुलती है और न ही निकलने पर चिपकती है

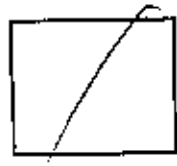
(8) शिराओं में रक्त धीरे से आने पर फुल जाती है और निकलने पर चिपक जाती है

(9) धमनी मोटी लचीली तीन स्तरों की बनी होती है

(9) शिराओं कोमल धमनियों की तरह ही तीन स्तरों की बनी होती है

(10) केवल पल्सो-फ्यूरेनियम

(10) केवल पल्सो-फ्यूरेनियम



एक वक्र का चित्र



| | |
|---------------|----------------------|
| विमनी का पालन | कर कर सभी |
| सभी में शुद्ध | में अशुद्ध रक्त रहता |
| रक्त रहता है | है |

प्रश्न नं - 14 (उत्पत्ति)

30 सुषुम्ना नाडी →

मस्तिष्क की मैड्युला ऑक्सिगोरा क्लोस्टि के महारज्जु से निकल कर मेरुजंघु बन जाती है यह कुशैरकदंड में की न्यूरल केनॉल में बिलनाकार रचना होती है और लम्बर भाग तक फैली रहती है यह अन्तिम भाग में होती है जो अन्तिम सूत्र कहलाती है। मेरुजंघु से दो प्रकार के तन्तु निकलते हैं।

- (1.) अस्त्रावाहक
- (2.) सन्देश वाहक

द्वीनी अपने नाम के अनुसार ही सन्देश और अस्त्रा पहुंचाने का कार्य करते हैं।

कार्य →

सुषुम्ना नाडी के कार्य

B
S
E
M
P



निम्नलिखित काय ह।

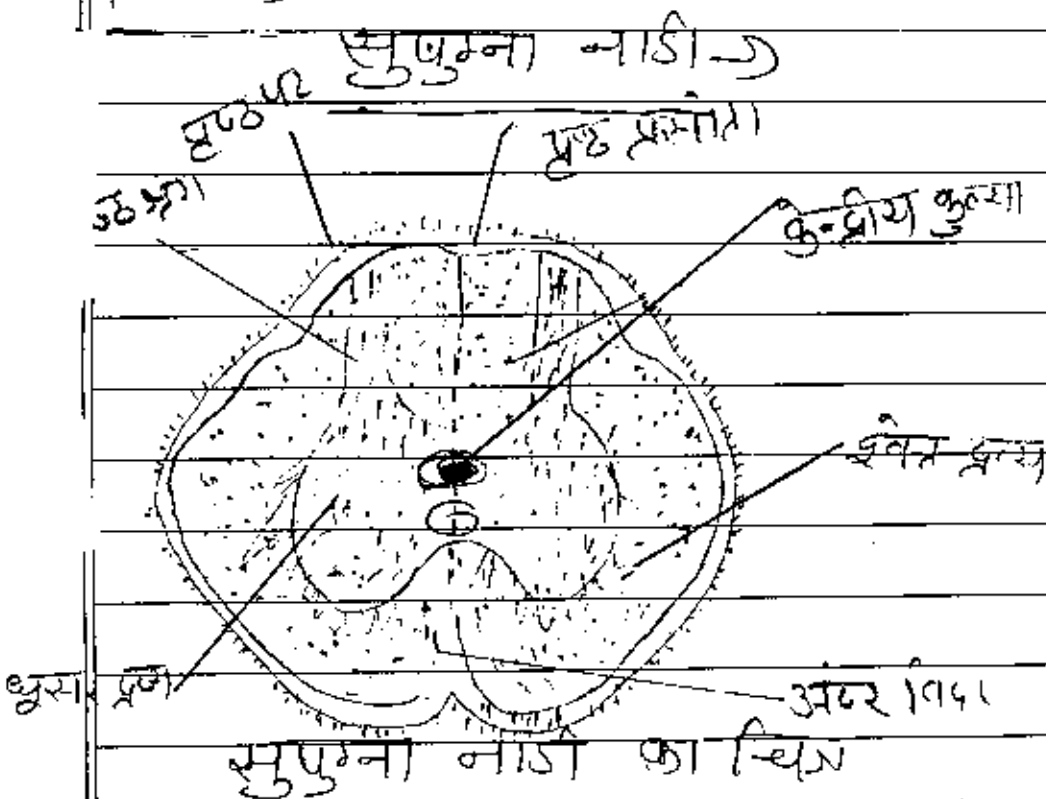
1. सुषुम्ना मस्तिष्क से आने वाली प्रेरणाओं के लिए मार्ग प्रदान करती है।

2. यह प्रतिवर्तन क्रियाओं का केन्द्र है।

B
S
E
M
P

3. शरीर के विभिन्न भागों के उद्दीपनों को मेरुदण्ड को संचालन तंत्रिका द्वारा मस्तिष्क तक पहुंचाने का कार्य करती है।

चित्र ->





प्रश्न न-४

30

दवाव बिन्दु ->

दवाव बिन्दु वह बिन्दु होता है जिसे बमनी के नीचे स्थित अस्थि के सहारे दवावा जाता है जिससे एक स्राव बन्द हो जाता है उसे दवाव बिन्दु कहते हैं।

B
S
E
M
P

शरीर में पाये जाने वाले दवाव बिन्दुओं के नाम निम्नलिखित हैं।

(1) प्रथम दवाव बिन्दु ->

यह ग्रीवा क्षेत्र में होता है।

(2) द्वितीय दवाव बिन्दु ->

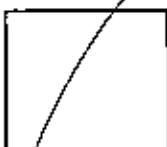
द्वितीय दवाव बिन्दु कान के पीछे सामने की ओर होता है।

(3) तृतीय दवाव बिन्दु ->

तृतीय दवाव बिन्दु दैनो ज्वजे के महय कोणों के आकार में 2.5 सेमी की दूरी पर स्थित होता है।

(4) चतुर्थ दवाव बिन्दु ->

चतुर्थ दवाव बिन्दु कौलर अस्थि के भीतर की ओर होता है।



पृष्ठ के अंकों का योग



(5.) पंचम स्तंभ (जड़) -

दृढाव बिन्दु ^{पंचम} मुखात् के भीतरी भाग में स्थित होता है।

(6.) छठवां दृढाव बिन्दु -

दृढाव बिन्दु ^{छठवां} मुखात् के पास होता है।

प्रश्न नं- 15 (आवक)

30 जीवाणु -

जीवाणु सभी स्थानों पर पाये जाते हैं इन्हें हम अपनी नज़र औरों से नहीं देख सकते हैं उन्हें जीवाणु कहते हैं।

जीवाणुओं में अविंगी प्रजनन दो प्रकार से होता है जो निम्नलिखित हैं।

(1.) द्विविखण्डन

(2.) अन्तः जीवाणु या स्पॉरोसोप

(1.) द्विविखण्डन -

प्रत्येक जीवाणु

B
S
E
M
P

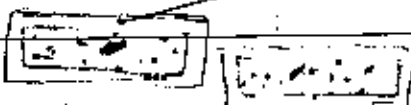
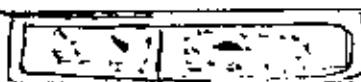
[
P
1



कौशिका जल, पदार्थों का जल पर विभाजन होता है। पृष्ठी कोशिकाएँ अलग होकर विभाजन करती हैं जीवाणुओं की कुछ जातियों में विभाजन 18-20 मिनट बाद विभाजन होता है इस प्रकार एक जीवाणु से उतने ही जीवाणु बन जाते हैं जिनका वजन 2 हज़ार टन से भी अधिक होता है

जीवाणुओं में द्विविखंडन विभाजन निम्न प्रकार से होता है।

- (1) अनुप्रस्थ पर या भित्ति का निर्माण
- (2) सतत कोशिकाओं का अलग होना
- (3) कौशिका द्रव्य का दो समान भागों में विभाजन
- (4) कौशिका भित्ति का दो समान भागों में विभाजन



जीवाणुओं में द्विविखंडन का चित्र



पृष्ठ के अंकों का योग



Q. अन्तःबीजाणु -

कुछ क्लोस्ट्रीडियम तथा बैसीलस प्रकार के जीवाणुओं में अन्तःबीजाणु बनते हैं। शुष्क दशाओं में मातृ कोशा संतति कोशिकाओं से अलग होकर सारा द्रव्य संकलित करती हैं।

अन्तःबीजाणु उपयुक्त अल्पीय माध्यम पाने पर यह मोटा फुलकर हो जाता है और इसकी भिन्नि फट जाती है और जीवन यापन करने लगती है। इसमें से एक कोशिका अलग हो जाती है।

प्रश्न नं-16

प्राणायाम -

प्राणस्य आयाम इति प्राणायामः अत्र प्राणो का विस्तार ही प्राणायाम है यह अप्ठंगियो का चतुर्थ पाद है इससे शरीर स्वास्थ्य रहता है और लम्बी अवधि को प्राप्त होता

है।

प्राणायाम के लाभ—)

प्राणायाम के लाभ निम्न

हैं।

(1.) प्राणायाम से पाचन तंत्र के सभी अंग सक्रिय हो जाते हैं।

(2.) पाचन संस्थान की सभी व्याधियाँ कब्ज, पेट दर्द आदि दूर हो जाती हैं।

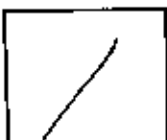
(3.) प्राणायाम से शरीर स्वस्थ रहता है।

(4.) प्राणायाम से मस्तिष्क को पर्याप्त तन्वी शक्ति मिलती है।

(5.) प्राणायाम से व्यक्ति दीर्घ आयु को प्राप्त करता है।

(6.) प्राणायाम से एक शुद्धिकरण की क्रिया होती है।

(7.) प्राणायाम से ~~हृदय~~ हृदय इत्यादि सब अंगों के प्राण प्रवाह में सन्तुलन आ जाता है।





प्रश्न 7-12 (अथवा)

30 किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक परिवर्तन निम्नलिखित हैं।

बालक में शारीरिक परिवर्तन ->

किशोरा-
वस्था में बालक का शारीरिक परिवर्तन तीव्र गति से होता है।
मूँह पर दाढ़ी मूँह आ जाती है आवाज में भारीपन आ जाता है और लम्बाई में वृद्धि होती है तथा यौवन परिवर्तन भी होने लगते हैं।

बालिका में शारीरिक परिवर्तन ->

किशोरावस्था में बालिकाओं में अनेक शारीरिक परिवर्तन होते हैं।
बोँह चौड़ी हो जाती है स्तनों में उभार आ जाता है।
लड़कियों में महाभारी चक्र प्रारम्भ हो जाता है। आवाज में सुरीलापन आ जाता है।
यौवन परिपक्वता प्रारम्भ हो जाती है।

B
S
E
M
P



प्रश्न नं- 9 (अथवा)

- 30 पाट्टियाँ बाँधने के उद्देश्य निम्नीयलिखित हैं
- (1) पाट्टियाँ घाव को संक्रमण से बचाती हैं।
 - (2) पाट्टियाँ घाव को सुरक्षित रखती हैं।
 - (3) पाट्टियाँ रक्त स्राव को कम करती हैं।
 - (4) पाट्टियों का उपयोग रोगी को उठाने एवं ले जाने में किया जाता है।
 - (5) पाट्टियाँ दवा एवं रुई को घाव पर सही से रखती हैं।
 - (6) पाट्टियाँ घाव को और अधिक बढ़ने से रोकती हैं।

प्रश्न नं- 13

धालिका के प्रति बैक्टीरिया के कारण निम्नीयलिखित हैं

- (1) ब्रिच काल
- (2) शिशु काल
- (3) किशोर काल
- (4) प्रसवपूर्व तथा प्रसवकाल

B
S
E
M
I



1. भ्रूणकाल ->

भ्रूणकाल में लिंग परीक्षाएं एवं भ्रूण हत्या पर सखती से रोक लगानी होगी यद्यपि सरकार ने इसे रोकने के लिए पी. एन. डी. टी स्केट बनाया गया है।
 यह कानून तो बना दिया गया है लेकिन अभी भी आव्य बालिकाओं की हत्या हो रही है। यही कारण है कि पुरुष हज़ारों की संख्या में हैं और स्त्री कम।

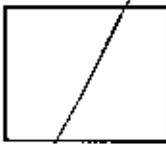
2. शिशुकाल ->

शिशुकाल में बालक को बालिकाओं की अपेक्षा शिक्षा तथा पोषण में विशेष महत्व दिया जाता है लेकिन बालिकाओं को शिक्षा नहीं दी जाती है। यही कारण है कि अधिक संख्या में बालिका अशिक्षित हैं।

3. किशोरकाल ->

किशोरकाल में बालिकाओं का विवाह शीघ्र कर दिया जाता है गर्भधारण करना उनकी अहम की समस्या पैदा हो जाती है।

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग



जिससे 14 वर्ष की आयु में ही शादी हो सकती है। कानून के अनुसार 18 वर्ष तक की बालिकाओं का विवाह करना चाहिए लेकिन आज भी अधिक संख्या में बाल विवाह हो रहे हैं।

क) बाल विवाह एवं प्रौढकाल -

इस अवस्था में बालिकाओं को वैध प्रथा, शारीरिक कठिनाइयों आदि का सम्मना करना पड़ता है और बालिकाओं को बौद्धिक माना जाता है।

यही कारण है कि बालिकाओं के प्रति भेदभाव किया जाता है।

प्रश्न सं-7 (अवकाश)

30 वायशंसु ग्रन्थि -

वायशंसु ग्रन्थि अन्तर्जातीय लिम्फाड ग्रन्थि है यह स अकार की द्विपाक्षी ग्रन्थि है जो अक्सर नली के दोनों ओर गर्दन में पायी जाती है। वायशंसु ग्रन्थि का भार 20 से 40 ग्राम तक होता है।

पृष्ठ के रैकों का योग

B
S
F
M
P



व्हायरसोइड ग्रन्थि से स्रावित होने वाले हार्मोन दो है।

- (1) व्हायरसोक्सिन हार्मोन
- (2) व्हायरसोकेल्सिरोनिन हार्मोन

1.) व्हायरसोक्सिन हार्मोन के कार्य :-

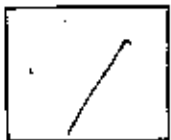
कार्य निम्नालिखित है। (क) इसके

- (1.) उपापचारा दर बढ़ जाती है।
- (2.) कोशिका में O_2 की स्वापत को निराश्रित करता है।
- (3.) आंत में ग्लूकोज के अवशोषण की दर को बढ़ाता है।
- (4.) हृदय स्पंदन दर बढ़ाता है।

2.) व्हायरसोकेल्सिरोनिन हार्मोन :-

हार्मोन व्हायरसोइड ग्रन्थि से स्रावित होने वाला हार्मोन है ^{राह} ~~व्हायरसोइड~~ ^{अशोषण} ~~अशोषण~~ की कमी कमी से बंधा रोग हो जाता है। यह पीयूष ग्रन्थि से स्रावित होने वाले हार्मोन व्हायरसोइडिक हार्मोन से संयोग करता है और व्हायरसोक्सिन हार्मोन के स्रावण से व्हायरसोइड ग्रन्थि कुल जाती है ~~अ जिससे~~

B
S
E
M
P

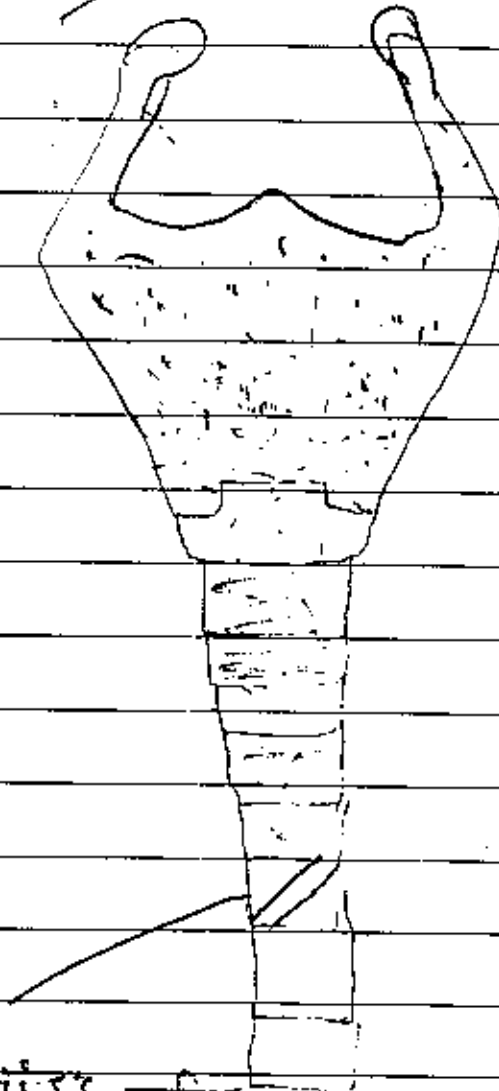




यां

हस्त
गर्दन
हस्त

जिससे शरीर का ताप बरकरार देने लगती है।
यह शरीर या गर्मांग को ठंडा करता है।



वायुरांग ज्ञानि

B
S
E
M
P



यह है बकी का लोग

24

+

=

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



65
79

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग